International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 03-08-2019; Accepted: 05-09-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 6; November 2019; Page No. 18-19

हिंदी भाषा की विकास में कला और मनोरंजन का महत्व

प्रवीण बोरा
हिन्दी विभाग, मणिपुर विश्वविद्यालय, कांचीपुर, इम्फ़ाल, मणिपुर, भारत

प्रस्तावना

आज से लगभग पाँच हजार वर्ष पूर्व जब भाषा का विकास नहीं हुआ था, तब मनुष्य अपने भावों एवं विचारों को दूसरों के समक्ष संकेतों या प्रतीकों के द्वारा अभिव्यक्त करता था। मनुष्य समाज में रहकर निरंतर अपना विकास करता रहा। किंतु केवल संकेतों या प्रतीकों के द्वारा भावों एवं विचारों को पूर्ण रूप से अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता था, कही न कही मनुष्य को अपनी विचारों की आदान-प्रदान में कमी महसूस होने लगा। अतः भाषा ही मनुष्य के बीच भावों और विचारों के संचार का सशक्त माध्यम बना। रीति-रिवाज, रहन-सहन, खान-पान की भाँति ही प्रत्येक देश की या प्रत्येक समुदाय की अपनी अलग भाषा होती है, जिसके द्वारा उस देश के वासी एक-दूसरे से संपर्क स्थापित कर सकते हैं। भारत की संपर्क भाषा हिंदी है। इसीलिए भारत में प्राचीन काल से हिंदी की विकास क्षेत्र में अन्य पद्धतियों या विधाओं की तरह कला और मनोरंजन का भी बहुत ही बड़ा महत्व रहा है।

भाषा के रूप में हिंदी की उत्पत्ति 1000 ई० पूर्व में हुई तथा यह संपर्क भाषा के रूप में देश में प्रचलित रही। आदिकाल के सिद्धों और नाथों के साहित्य से लेकर आधुनिक काल के पंत, महादेवी तक के साहित्य के माध्यम से हिंदी की बढ़ती रूप को हम देख सकते हैं। इन साहित्यों के मूल में ही देश की विभिन्न कला-संस्कृति, रीति-रिवाजे, मनोरंजन आदि हैं। कला और मनोरंजन से समान्यतः हमें देश में प्रचलित फिल्मों, गीतों, चित्रों, नाटक, जनसंचार माध्यमों, लोक-संस्कृति के विभिन्न स्तर आदि क्षेत्र ज्ञात होते हैं, अतः हिंदी भाषा की विकास क्षेत्र में कला और मनोरंजन का महत्व को अलगा कर देखने की प्रयास किया गया है।

1. स्वतंत्रतापूर्व के जनसंचार माध्यमों में हिंदी

हिंदी का पहला समाचार पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' 1826 ई० में कोलकाता से प्रकाशित हुआ, जिसने जनसंचार के क्षेत्र में एक नवीन युग का सूत्रपात किया। इसके बाद 10 मई 1829 ई० में राजा राममोहन राय ने कोलकाता से बंगदूत का प्रकाशन कराया। 1845 ई० में बनारस अखबार निकला, जो हिंदी भाषी प्रदेशों से निकलने वाला पहला हिंदी समाचार पत्र था। पत्र-पत्रिकाओं के इतिहास में 1857 ई० को युगांतकारी वर्ष माना गया है। इस काल में प्रकाशित विभिन्न हिंदी पत्रों ने 1857 ई० के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के लिए जन-जन में अँग्रेजी दस्ता से मुक्ति पाने के लिए राष्ट्रीय चेतना का संचार किया तथा सामाजिक विसंगतियों के निवारण में सक्रिय भूमिका अदा की।

अजीमुल्ला खाँ द्वारा संपादित 'पयामे आजादी' ने लोगों में स्वदेश प्रेम की भावना जागृत की। गणेश शंकर विद्यार्थी व बाबुराव विष्णु पराड़कर ने 'प्रताप' और 'आज' के माध्यम से जन आंदोलन को गति प्रदान की। इसी तरह सरस्वती, चाँद, प्रताप, प्रदीप, जैसे तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं ने जनता में राष्ट्रीय चेतना का संचार किया और कांतिकारी जन आंदोलन का प्रणेता बने। इसी जन आंदोलन के माध्यम से भाषा का भी विकास क्रमशः होता गया। इसी क्रम में भारतेन्दु द्वारा प्रकाशित पत्र-पत्रिकाओं का योगदान भी महत्वपूर्ण रहा। हिंदी भाषा की विकास क्रम में इन पत्र-पत्रिकाओं की अनगिनत भूमिका प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप में रही है, जिसे नकारा नहीं जा सकता।

2. स्वतंत्रोत्तर भारत में जनसंचार के क्षेत्र में हिंदी

स्वतंत्रोत्तर भारत में हिंदुस्तान, नवभारत टाइम्स, अमर-उजाला, दैनिक जागरण, पंजाब केसरी, जननायक, वीर अर्जुन, स्वतंत्र भारत जैसे हिंदी समाचार पत्रों ने काफी प्रसिद्धि पायी। हिंदी भाषा को स्वतंत्र बनाने में इन पत्र-पत्रिकाओं का महत्व सराहनीय है।

3. आकाशवाणी में हिंदी

जनसंचार माध्यमों में आकाशवाणी का स्थान महत्वपूर्ण है। आधुनिक संदर्भ में भारत में आकाशवाणी का प्रारंभ 1927 ई० में हुआ। स्वतंत्रतापूर्व आकाशवाणी का प्रसारण क्षेत्र अत्यंत सीमित था जिसका विस्तार स्वतन्त्रता पश्चात व्यापक हो गया और इसका नामकरण 'ऑल इंडिया रेडियो' हो गया। जगदीशचंद्र माथुर जब इसके महानिदेशक बने, तब हिंदी के कई प्रभावशाली कलाकार और विद्वान इससे जुड़ गए, जिससे हिंदी के प्रयोग के क्षेत्र में क्रांति आयी।

आकाशवाणी में कई हिंदी कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं, जिनका लाभ शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले सभी वर्ग के लोग उठाते हैं। इसमें कृषि, स्वास्थ्य, घरेलू समस्या, ज्ञान-विज्ञान, राजनीति, खेल, मनोरंजन से संबन्धित कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाते हैं। भारत की अधिकांश जनता आकाशवाणी द्वारा प्रसारित कार्यक्रम का आनंद उठती है। आकाशवाणी के माध्यम से हिंदी गाने सुनना सर्वाधिक लोगों को पसंद है। विज्ञापन एवं समाचार का प्रसारण इसके द्वारा किया जाता है, जिसे सामान्य बोलचाल की हिंदी या क्षेत्रीय भाषा में लोगों तक पहुंचाया जाता है। इसी तरह आकाशवाणी के माध्यम से हिंदी प्रदेशों के साथ ही साथ हिंदीत्तर प्रदेशों में भी हिंदी भाषा की विकास सही मायने में हो रही है। आकाशवाणी द्वारा प्रसारित विभिन्न कार्यक्रमों में प्रयुक्त नए-नए शब्दों के गठन एवं प्रयोगों से हिंदी अधिक समृद्ध एवं प्रभावशाली बन रही है।

4. दूरदर्शन में हिंदी

जनसंचार माध्यमों में दूरदर्शन का स्थान सर्वोपरि है। प्रारंभ में दूरदर्शन के एक ही चैनल द्वारा कार्यक्रम का प्रसारण किया जाता था पर अब कई चैनलों द्वारा कार्यक्रम का प्रसारण किया जाता है। उत्तरी भारत में प्रसारित चैनलों में कार्यक्रम का प्रसारण मुख्यतः हिंदी में ही किया जाता है। धारावाहिकों में सामान्य बोलचाल की हिंदी का प्रयोग किया जाता है। समाचार चैनलों द्वारा प्रसारित समाचार भी हिंदी में किए जाते हैं। नए-नए शब्दों के प्रयोग एवं कठिन शब्दों के प्रचार में दूरदर्शन की भूमिका अहम है। हिंदी में निर्मित एवं परसरित धार्मिक धारावाहिक रामायण एवं महाभारत ने हिंदी को अत्यधिक व्यापकता प्रदान की है। इन धारावाहिकों ने न केवल भारत बल्कि विदेशों में भी अपना प्रभाव छोड़ा है। समाचार, फिल्म, संगीत, कृषि, लोककला, धारावाहिक, खेल, नाटक जैसे विविध विषयों से संबंधित कार्यक्रमों का प्रसारण दूरदर्शन सफलतापूर्वक कर रहा है। आकाशवाणी और दूरदर्शन में जनसंचार के लिए हिंदी का प्रयोग किए जाने से सभी इलेक्ट्रोनिक माध्यमों जैसे कम्प्यूटर, तारमुद्रक, मोबाइल, लैपटाप आदि में भी इसका प्रयोग बढ़ गया है।

5. चलचित्र में हिंदी

हिंदी में चलचित्र निर्माण का कार्य 1912 ई॰ से प्रारंभ हुआ। 1912 ई॰ में आर॰ जी॰ टोनी तथा एन॰ जी॰ चित्रों ने साथ में मिलकर 'पुंडलिक' नमक चलचित्र बनायी। 1913 ई॰ में टुंडीराज गोविंद फाल्के ने 'राजा हरिचन्द्र' चलचित्र का निर्माण किया। 1935 ई॰ के उपरांत बोलती चलचित्र का युग प्रारंभ हुआ। आलम आरा आर्दशेर ईरानी के निर्देशन में बनी पहली बोलती चलचित्र है। हिंदी चलचित्र में प्रयुक्त वाक्यांशों एवं गीतों का प्रयोग आम लोग की अभिरूचि भी हिंदी चलचित्रों द्वारा जागृत हुई। भारतीय चलचित्रों के बदौलत ही विदेशी भी हिंदी सीखने की ओर प्रवृत्त हुए। वर्तमान हिंदी के प्रचार-प्रसार में हिंदी चलचित्रों का योगदान महत्वपूर्ण है। हिंदीत्तर प्रदेशों में बच्चों से वयस्क तक, शिक्षित व्यक्ति से अनपढ़ व्यक्ति तक हिंदी भाषा की सम्यक ज्ञान प्रदान करने हेतु हिंदी सिनेमा एक अहम भूमिका निभा रही है।

6. कम्प्यूटर में हिंदी

आधुनिक युग कम्प्यूटर का युग है। यह अत्याधुनिक जनसंचार माध्यम है। कम्प्यूटर में हिंदी के प्रयोग का प्रयास 1965 ई॰ से आरंभ हुआ। इंटीग्रेटेड कम्प्यूटर के आने से मुद्रण, प्रकाशन, सम्प्रेषण और भारतीय भाषाओं में मशीन संचालन का कार्य सरल हो गया है। भारत में सर्वप्रथम सिद्धार्थ नमक द्विभाषिक कम्प्यूटर बना। इसमें हिंदी-अँग्रेजी के साथ-साथ तमिल का भी प्रयोग किया गया था। त्रैभाषिक कम्प्यूटर में देवनागरी लिपि में अँग्रेजी में किए जाने वाले सभी कार्य हिंदी में कर पाना संभव हो गया। कम्प्यूटर में हिंदी में काम करने की सुविधा प्रदान करने वाले कई सॉफ्टवेर अब बाजार में उपलब्ध है। आई लीप पैड, सी-डैक, गूगल इण्डिक इनपुट, जैसे हिंदी सॉफ्टवेर की बाजार में उपलब्ध कम्प्यूटर में हिंदी के बढ़ती प्रयोग को दर्शाते हैं। कम्प्यूटर नहीं आधुनिक जनसंचार माध्यम इंटरनेट भी हिंदी के प्रयोग से अछूता नहीं है। इस माध्यम द्वारा हिंदी की पुस्तकों की उपलब्धता विस्तृत क्षेत्र में संभव हो पायी है। दूर बैठे व्यक्ति से बातचीत करना या लिखित संदेश भेजना अत्यंत सरल हो गया है। यह कई हिंदी चलचित्रों एवं गीतों का प्रसारण भी सरलतापूर्वक कर सकता है।

7. खेल-कूद में हिंदी

आज के संदर्भ में खेल-कूद के मैदान से भी हिंदी भाषा की विकास हो रही है। आज भारत में क्रिकेट, फूटबॉल, हॉकी, कबादी आदि खेल चारों ओर होड़ा-होड़ी मची है। भारतवर्ष में क्रिकेट की लोकप्रियता सबसे ज्यादा है। भारतवर्ष के अधिकांश व्यक्ति इस खेल का मनोरंजन करते हैं। खेल के मैदान के उपरांत दूरदर्शन, रेडियो आदि माध्यमों द्वारा प्रसारित किए जाने वाले इन सभी खेलों का 'कोमेंट्री'हिंदी भाषा में किया जा रहा है। जिसके सहायता से प्रत्यक्ष रूप में हिंदी भाषा की प्रचार-प्रसार हो रही है। खेल के कोमेंट्री के माध्यम से एक अनपढ़ व्यक्ति भी हिंदी को आसानी से समझ लेता तथा उसे ग्रहण कर पता है।

समाहार

भारत में हिंदी आम जनता की भाषा है। इसका जन्म साधारण जनता के लिए हुआ है और जब तक यह जनता के भावों की अभिव्यक्ति का माध्यम बनी रहेगी, जनता में आत्मबल का संचार करती रहेगी, तब तक इसे किसी प्रकार का भय नहीं है। यह निरंतर अपने विकास पाठ पर अग्रसर होती रहेगी। इस भाषा रूपी वृक्ष की जड़ जनता के हृदय में है। यह करोड़ों जनता की आशा, आकांक्षा, क्षुधा, पिपासा, धर्म, ज्ञान-विज्ञान की भाषा है। इसके बड़प्पन का कारण यह है कि यह करोड़ों जनता के हृदय और मस्तिष्क की भूख मिटाने का साधन है।

जनसंचार माध्यमों, आकाशवाणी, दूरदर्शन, कम्प्यूटर, इंटरनेट, खेल-कूद आदि में हिंदी का जितना प्रयोग हुआ है, हो रहा है या होगा, सभी का आधार सम्प्रेषण को पूर्ण रूप से सफल बनाना है। इस दृष्टिकोण से सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, वैज्ञानिक, रेल, डाक-तार जैसे विविध क्षेत्रों में यदि अन्य भाषाओं से भी शब्द ग्रहण करने की आवश्यकता पड़ती है, तो शब्दों को ग्रहण किया जा रहा है। इन विभिन्न माध्यमों में प्रयुक्त हिंदी न तो पूर्णरूप से साहित्यिक, काव्यात्मक और संस्कृतनिष्ठ है, बल्कि यह आम जनता की बोलचाल की भाषा है। यह आम जनता की वाणी को अभिव्यक्ति प्रदान करने में समर्थ है। हिंदी निरंतर अपने आप को समृद्ध बनाने में लगी है, जिससे इसके विश्व मंच पर स्थापित होकर संपूर्ण विश्व की जनता को संबोधित करने की संभावना साकार हो रही है।

संदर्भिका सूची

1. कुमार, डॉ॰ सुवास : 2007, "हिंदी विविध व्यवहारों की भाषा", 21-ए दरियागंज, नई दिल्ली -110002 : वाणी प्रकाशन।
2. सेठी, डॉ॰ रेखा : 2012, "विज्ञापन डॉट कॉम", 21-ए दरियागंज, नई दिल्ली -110002: वाणी प्रकाशन।
3. कुमारी, मनीला: 2016, "वर्तमान परिदृश्य में हिंदी", नोशन प्रैस, चेटपेट मद्रास-600031